टिप्पणी

2

भारतीय संस्कृति

क्या आपने कभी सोचा हैं कि मानव ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में, चाहे वह भाषा, साहित्य, कला व वास्तुकला हो या धर्म हो, हैरान कर देने वाली प्रगति की है। क्या आप कभी यह सोचकर हैरान हुए हैं कि यह संभव कैसे हुआ? निश्चित रूप से इसलिये क्योंकि हर बार हमें नई शुरुआत नहीं करनी पड़ी बल्कि, पूर्व पीढ़ी के द्वारा किये गये काम को उपयोग में लाने तथा उस पर आगे और निर्माण करने में हम सक्षम होते रहे हैं। आपने अपने लिये अपनी एक नई लिपि तैयार करने या एक नयी भाषा के निर्माण करने के बारे में कभी ध्यान ही नहीं दिया होगा। समाज के एक सदस्य के रूप में यह सब कुछ आपको पहले से ही दिया जा चुका है जिन्हें आप उपयोग में लाते हैं। फिर आप अपने योगदान से इसमें कुछ जोड़कर आने वाली पीढ़ी के लिये इसको समृद्ध करते हैं। यह एक लगातार चलने व कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य के पास प्रारंभ से ही एक अनोखा गुण है, जिसे संस्कृति के नाम से जाना जाता है। चूंकि संस्कृति जीवन जीने का एक तरीका है इसलिये आपकी एक संस्कृति है, आपके परिवार की एक संस्कृति है और वैसे ही आपके क्षेत्र और आपके देश की भी एक संस्कृति है। आप भारतीय संस्कृति के अनोखेपन के बारे में एवं इसके विशिष्ट लक्षणों के बारे में जानने के लिये उत्सुक होंगे। इस इकाई में हम जानेंगे कि कैसे भारतीय संस्कृति विशिष्ट है और इसकी क्या विशेषताएँ हैं?

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:–

- संस्कृति के विशिष्ट लक्षणों का वर्णन कर सकेंगे;
- भारतीय संस्कृति के केन्द्र बिन्दुओं और इसकी मुख्य विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे;

- भारतीय संस्कृति में अध्यात्मवाद की महत्ता का वर्णन कर सकेंगे;
- इसमें अंतनिर्हित एकता और विविधता के बिंदुओं की पहचान कर सकेंगे;
- भारतीय संस्कृति के साथ अन्य संस्कृतियों के समागम की प्रक्रिया को दर्शा सकेंगे।

2.1 भारतीय संस्कृति की विशेषतायें/मूलभूत लक्षण

भारतीय संस्कृति जीवन के समान ही बहुपक्षीय है। इसमें मनुष्य के बौद्धिक और सामाजिक पक्ष सम्मिलित हैं। यह मनुष्य की सौन्दर्यात्मक तथा आध्यात्मिक भावनाओं को भी दर्शाती है। वस्तुत: चरित्र का निर्माण करने वाली शक्ति के रूप में इसमें अवचेतन के प्रति प्रेरणा भी निहित है।

भारत के मानचित्र को देखिए। भारत एक ऐसा विशाल देश है जो स्वयं में भौतिक और सामाजिक वातावरण की अनेक विविधता को समाये हुए हैं। हम अपने आस-पास विभिन्न भाषाओं में बात करने वाले, विभिन्न धर्मों और रीति-रिवाजों को मानने वाले लोगों को देखते हैं। आप यह विविधता उनके खान-पान तथा पहनावे में भी देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त नृत्य तथा संगीत के क्षेत्र में भी हमारे देश में विविधतायें हैं लेकिन इन सभी विविधताओं के साथ इन सबमें एक एकात्मकता भी है जो इनको एक साथ जोड़ने का काम करती है। भारत में सदियों से लोगों का मेल-मिलाप होता रहा है। भिन्न-भिन्न जातीय व नृजातीय (Ethnic) पृष्ठभूमि तथा विभिन्न धर्मों पर आस्था रखने वाले काफी लोग यहाँ आकर बसे हैं। हमें नहीं भूलना चाहिये कि भारतीय संस्कृति का विविध व बहु-आयामी चरित्र एक लंबी अवधि के दौरान सभी विविध सांस्कृतिक समूहों के संश्लेषण का ही देन है। भारतीय संस्कृति का यह विशिष्ट लक्षण और अनोखापन सभी भारतीयों के लिये अमूल्य धरोहर है।

2.1.1 निरंतरता और बदलाव

संसार के विभिन्न देशों और क्षेत्रों में अनेक महान संस्कृतियों का विकास हुआ। इनमें से बहुत सी लुप्त हो गईं या उनका स्थान अन्य संस्कृतियों ने ले लिया। बहरहाल भारतीय संस्कृति में सहनशीलता का गुण रहा है। कुछ बड़े बदलाव और उथल-पुथल के बावजूद भारतीय इतिहास की धारा में शुरुआत से लेकर आज तक निरंतरता की एक कड़ी देखी जा सकती है।

आपने हड़प्पा की उस सभ्यता के बारे में पढ़ा होगा, जो भारतीय उपमहाद्वीप में फली-फूली थी। यह लगभग 4500 साल से भी ज्यादा पुरानी है। पुरातत्त्वविदों को यहाँ हड़प्पा सभ्यता से भी पहले की संस्कृति के होने के प्रमाण मिले हैं। यह प्रमाण हमें बताते हैं कि हमारा इतिहास बहुत प्राचीन है। इसके बावजूद आश्चर्यजनक बात यह हैं कि आज भी भारत वर्ष के गाँवों के मकानों की बनावट हड़प्पा के समय के मकानों से बहुत ज्यादा भिन्न नहीं है।

टिप्पणी

हड़प्पा कालीन संस्कृति की कुछ प्रथायें आज भी प्रचलित हैं। जैसे मातृ देवी और पशुपति की उपासना। वैदिक, बौद्ध और जैन धर्म तथा कई अन्य धर्मों की परम्परायें आज भी प्रचलित हैं लेकिन इसके साथ बदलते तत्त्वों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिये जैसे बंबई और दिल्ली जैसे महानगरों की बहुमंजिली इमारतें जो हड़प्पा सभ्यता के एकमंजिला मकानों से काफी भिन्न हैं। यहाँ इस तथ्य पर ध्यान देना होगा कि हमारी सभ्यता में निरंतरता और बदलाव साथ-साथ चलता रहता है। वास्तव में निरंतरता बनाये रखने के साथ-साथ परिवर्तन भारतीय संस्कृति की विशिष्टता रही है। जहाँ एक ओर संस्कृति के दर्शन की मूल भावना निरंतर रही है वहीं संस्कृति उन तत्त्वों को लगातार बदलती रही है जो आधुनिक युग के अनुरूप नहीं रहे हैं। हमारे लंबे इतिहास में कई उतार-चढ़ाव आये, जिसके परिणामस्वरूप कई आंदोलन विकसित हुए और बदलाव लाये गये। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में जैन और बौद्ध धर्म द्वारा वैदिक धर्म में प्रवर्तन तथा आधुनिक भारत में अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ नवजागरण ऐसे उदाहरण हैं जिनके द्वारा भारतीय चिंतन और व्यवहार में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। इस प्रकार फिर भी भारतीय संस्कृति के मूल दर्शन का सूत्र टूटा नहीं और जारी है। इस प्रकार निरंतरता और परिवर्तन का क्रम भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। यह हमारी संस्कृति की गतिशीलता का परिचायक है।

2.1.2 विविधता और एकता

विगत तीन हजार वर्षों में भारतीय संस्कृति बड़ी सफलता पूर्वक लेकिन शांत रहकर अन्य धर्मों और संस्कृतियों के उत्तम धारणीय तथ्यों को देखती रही है और समय-समय पर उनको अपने अन्दर समाविष्ट भी करती रही है।

निस्सन्देह संसार में कुछ ही संस्कृतियों में ऐसी विविधता है जैसी भारतीय संस्कृति में। शायद आप हैरान होते होंगे कि क्यों पकाने के लिये केरल के लोग नारियल तेल इस्तेमाल करते हैं और उत्तर प्रदेश के लोग सरसों का तेल इस्तेमाल करते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि केरल एक समुद्रतटीय प्रदेश है और नारियल वहाँ बहुतायत में पाया जाता है जबकि उत्तर प्रदेश एक मैदानी इलाका है जो कि सरसों के उत्पादन के लिये अनुकूल है। पंजाब के भाँगड़ा नृत्य या आसाम के बिहू नृत्य में क्या समानता है? दोनों ही फसल की अच्छी उपज के बाद मनाये जाते हैं। क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि हम अलग-अलग भाषायें बोलते हैं जैसे बंगाली, तमिल, गुजराती या उड़िया? भारत विभिन्न प्रकार के नृत्य और संगीत का भण्डार है जिसे हम सामान्यत: उत्सव के लिये और सामाजिक उत्सवों जैसे शादी या बच्चे के जन्म के समय प्रयोग में लाते हैं।

हमारे देश में बहुत सी भाषायें और बोलियाँ बोली जाती हैं जिन्होंने साहित्य को एक महान विविधता प्रदान की है। दुनिया के सभी महान धर्मों के लोग यहाँ पर भाईचारे के साथ निवास करते हैं। क्या आप जानते हैं कि भारत संसार के बहुत से धर्मों का निवास स्थान हैं जैसे जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिक्ख धर्म और हिन्दू धर्म। यहाँ पर अनेक तरह की वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला का निर्माण हुआ है। विभिन्न प्रकार के लोक तथा

टिप्पणी

शास्त्रीय संगीत और नृत्य हमारे देश में विद्यमान हैं। इसी तरह अनेक त्योहार और प्रथायें भी हैं। यही विविधता देश की संस्कृति को एक तरफ साझी या मिश्रित बनाती है तो दूसरी ओर इसे समृद्ध और सुंदर भी बनाती है। हमारी संस्कृति में इतनी विविधता क्यों है? इसके अनेक कारण हैं। देश की विशालता तथा भौगोलिक और जलवायु संबंधी विशेषताओं की भिन्नता इस विविधता का एक प्रमुख कारण है।

विभिन्न नृजातीय समूहों का परस्पर मिल जाना हमारी सांस्कृतिक विविधता का दूसरा महत्त्वपूर्ण घटक है। अनंत काल से यहाँ-वहाँ से लोग यहाँ आते रहे हैं और बसते रहे हैं। हम यहाँ पर प्रोटो आस्ट्रेलायड, नीग्रो और मंगोलायड जैसी आदिम प्रजातियों से संबंधित लोगों को पाते हैं। विभिन्न नृजाति समूह जैसे ईरानी, ग्रीक, कुषाण, शक, हूण, अरबी, तुर्की, मुगल और यूरोपियन भी यहाँ आये। वे यहीं बस गये और यहाँ के स्थानीय निवासियों के साथ घुल-मिल गये। अन्य संस्कृति के लोग अपने सांस्कृतिक गुणों, चिंतन और विचारों के साथ आये थे जो यहाँ की संस्कृति के साथ समायोजित हो गये। आप यह जानकर हैरान होंगे कि सिलाई की हुई पोशाकें जैसे कि सलवार, कुर्त्ता, टोपी आदि केवल ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के कुषाणों शकों तथा पार्थियानों द्वारा भारत में लाई गयी थी। इससे पहले भारतीय बिना सिलाई किये हुये कपड़े पहनते थे। आधुनिक पोशाक जैसे- पैंट, शर्ट और स्कर्ट यूरोपीय लोगों के द्वारा अट्ठारहवीं सदी में लायी गयी थीं। भारत ने सदियों से हमेशा अन्य विचारों को अपनाने की अपनी असाधारण क्षमता को दिखाया है। इसने हमारी संस्कृति को समृद्ध और विविध बनाया है।

बाहरी संस्कृतियों से संपर्क के साथ-साथ भारत के भीतरी विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों के बीच भी आदान-प्रदान होता रहा है। लखनऊ में चिकन का काम, पंजाब की फुलकारी, बंगाल की कांथा कढ़ाई, उड़ीसा का पटोला जैसी विविधतायें एक खास क्षेत्रीय विशेषता का अहसास कराती हैं। भारत के पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण केन्द्र अपनी-अपनी विशेषताओं के बावजूद पूर्णतः अलगाव में विकसित नहीं हुए हैं। क्षेत्रीय भौगोलिक अवरोधों के बावजूद यहाँ के लोग व्यापार व तीर्थ यात्रा के लिये भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक आते जाते रहे हैं। कुछ इलाके शासकों की विजयों और संधियों के कारण एक दूसरे से जुड़ गये। लोगों ने एक स्थान से दूसरे स्थानों तक सांस्कृतिक आचार-व्यवहार एवं विचारों को संचारित किया। सैनिक अभियानों के कारण भी यहाँ के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक गये। इसने भी विचारों के आदान-प्रदान में सहायता की है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में एक समानता का आगमन हुआ जिसे हमारे संपूर्ण इतिहास ने बरकरार रखा है। हमारी एकता का एक और महत्त्वपूर्ण कारण है, वह है मानसून प्रणाली। भौगोलिक विविधताओं और मौसमी विभिन्नताओं के होते हुए भी, भारत एक अन्तर्निहित एकता का अनुभव करता है। मानसून व्यवस्था भारतीय जलवायु की संरचना का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है जो पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोता है। मानसून के आगमन ने सुनिश्चित कर दिया है कि भारतीय लोगों का मुख्य पेशा कृषि होगा। साथ ही जलवायु और भौगोलिक स्वरूपों की विभिन्नता ने खानपान, पोशाक, आवास और आर्थिक गतिविधियों को भी प्रभावित किया है जिससे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थानों का निर्माण हुआ है।

टिप्पणी

इन घटकों ने व्यक्ति की सोच और दर्शन को प्रभावित किया। भौतिक विशेषताओं और जलवायु की विभिन्नता के कारण विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का विकास हुआ है। विभिन्न क्षेत्रों की किन्हीं खास विशेषताओं ने इन संस्कृतियों को एक पहचान दी है।

हमारी संस्कृति की मिश्रित प्रकृति, हमारे संगीत, नृत्य के स्वरूपों, नाटकों, कला और अन्य कलाकृतियों जैसे चित्रकला, मूर्तिकला तथा हमारे स्मारकों की वास्तुकलाओं में हमारी सभी भाषाओं के साहित्य भी इसी प्रकृति को प्रतिबिंबित करते हैं।

हमारी राजनीतिक पद्धतियों में भी ऐसी ही विविधता में एकता प्रलक्षित होती है। वैदिक काल के शुरुआती दौर में समाज मूलत: पशुपालक था, लोग चरागाह की खोज में एक जगह से दूसरी जगह घूमा करते थे। कृषि कार्य के आरंभ के साथ वैदिक काल के लोग एक जगह स्थायी रूप से बसने लगे। इस स्थायी जीवन से सामाजिक उन्नति और शहरों का विकास हुआ जिसमें नियम और कानून की आवश्यकता महसूस हुई। तब एक राजनीतिक संगठन का उदय हुआ। इनमें सभा और समितियाँ शामिल थीं। इन राजनीतिक निकायों के द्वारा लोग सरकार चलाते थे। समय के साथ राष्ट्र की अवधारणा का उदय हुआ और एक खास क्षेत्र पर अधिकार शक्ति का नया मापदंड बना। कुछ जगहों पर गणराज्यों का भी उदय हुआ था। ईसा पूर्व छठी शताब्दी से चौथी शताब्दी को भारत में महाजनपद काल के रूप में जाना जाता है। सरकार चलाने में राजाओं की बहुत बड़ी भूमिका होती थी। इन महाजनपदों में विशाल साम्राज्य भी स्थापित हुये जहाँ सम्राट के पास निरंकुश शक्ति होती थी। अशोक, समुद्र गुप्त, हर्षवर्द्धन जैसे प्राचीन शासकों के बारे में आप शायद जानते होंगे। मुगलों ने भी भारत में एक बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित किया था। फिर अंग्रेजों ने अपने आपकों यहाँ स्थापित किया और 1858 में भारत ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा बन गया था। परंतु एक लंबे संघर्ष के बाद हम 1947 में अपनी आजादी को प्राप्त करने में सफल हुए। आज हम एक प्रभुतासंपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष तथा जनवादी गणतंत्र हैं और हमारे देश के एक कोने से दूसरे कोने तक सरकार की समरूप व्यवस्था है।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. भांगड़ा किस राज्य का लोकप्रिय नृत्य हैं?
2. असम के नृत्य को क्या कहते हैं?
3. दूसरी शताब्दी ई.पू. में भारत में सलवार, कुर्त्ता, टोपी आदि को कौन लाये थे?
4. पटोला के लिये कौन-सा क्षेत्र प्रसिद्ध है?

2.1.3 धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण

भारतीय संस्कृति का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप भिन्न सांस्कृतिक समूहों का एक लंबे समय से परस्पर घुल-मिल जाने का परिणाम है। यहाँ आपस में संघर्षों के भी कई उदाहरण है,

टिप्पणी

लेकिन सामान्यत: लोग यहाँ शताब्दियों से शान्तिपूर्वक आपस में मिल-जुल कर रहते आ रहे हैं। भारत की लोकप्रिय सांस्कृतिक परम्परायें इस मिश्रित या साझी संस्कृति के सबसे अच्छे उदाहरण हैं, जिसमें काफी संख्या में भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग आपस में मिल-जुल कर रहते हैं।

आप जानते हैं कि हमारे देश में विचारों और आचरणों में बहुत ज्यादा विविधतायें मौजूद हैं। ऐसी विविधताओं के बीच में किसी एक विशेष विचार का प्रभुत्व संभव नहीं है। आपको मालूम होगा कि भारत में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैनी, पारसी और यहूदी सब रहते हैं। संविधान भारत को एक धर्मनिरपेक्ष देश घोषित करता है। हर कोई अपने मन पसंद धर्म को मानने, पालन करने और प्रचार करने के लिये स्वतंत्र है। राज्य का अपना कोई धर्म नहीं है, और यह सभी धर्मों को समान नजरों से देखता है। धर्म के आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होता है। जनता ने भी काफी हद तक एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित किया है और वह 'जीयो और जीने दो' की अवधारणा पर विश्वास करती है।

धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार हमारे गणतंत्र की धर्मनिरपेक्षता को दर्शाता है। पश्चिमी संदर्भों में धर्म-निरपेक्षता के विकास का मतलब धर्म और राजसत्ता का पूर्ण रूप से अलगाव होता है। भारत में धर्मनिरपेक्षता को एक सकारात्मक अवधारणा के रूप में लिया जाता है जो सभी लोगों के अधिकारों, विशेषत: अल्संख्यकों के अधिकारों की रक्षा तथा भारत की जटिल सामाजिक संरचना के हिसाब से उपयुक्त है।

2.1.4 सार्वभौमिकता

सह-अस्तित्व की अवधारणा केवल देश की भौगोलिक और राजनीतिक सीमा रेखाओं में आबद्ध नहीं है। भारत का एक विश्वपरक दृष्टिकोण है और वह संपूर्ण दुनिया में शांति और सद्भाव का संदेश फैलाता रहा है। भारत नस्लवाद और उपनिवेशवाद के खिलाफ जोरदार आवाज उठाता आ रहा है। इसने शुरू से ही दुनिया में शक्ति-खेमों के बनने का विरोध किया है। वास्तव में भारतवर्ष गुट निरपेक्ष आंदोलन का एक, संस्थापक सदस्य रहा है। विकासशील और विकसित देशों के विकास के प्रति भारतवर्ष हमेशा से प्रतिबद्ध रहा है। इस तरीके से भारत विश्व-भ्रातृत्व के भागीदार के रूप में अपनी जिम्मेदारी को निभा रहा है और दुनिया की प्रगति में अपना योगदान करता आ रहा है।

यह भी स्मरणीय है कि भारत का उपमहाद्वीप सभी राजनैतिक सीमाओं को लांघते हुए सदियाँ से एक सांस्कृतिक इकाई रहा है।

2.1.5 भौतिकवादी और अध्यात्मवादी

संस्कृति किसी जाति या राष्ट्र की मन, रुचियों, चरित्र, विचार, कला, कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में आध्यात्मिक विकास का नाम है।

टिप्पणी

भारत आध्यात्मवाद की भूमि के रूप में जाना जाता है खासकर पश्चिम में। हालांकि प्राचीन काल से वर्तमान समय तक का भारतीय इतिहास भौतिकतावादी और गैर भौतिकतावादी संस्कृतियों के साथ-साथ विकास को दर्शाता है। याद कीजिये, हड़प्पा संस्कृति शहरी थी। उन्होंने वैज्ञानिक तरीकों से शहरों का निर्माण किया था और उनके नगरों में विस्तृत निकास प्रणाली भी थी। उन लोगों के पास गणित और नाप-तौल का सशक्त ज्ञान था। हड़प्पा के लोगों का बाहरी दुनिया के साथ व्यापारिक संबंध भी था और वे सुमेर की सभ्यता के लोगों के साथ व्यापार करने के लिए समुद्र पार की यात्राएँ किया करते थे।

चिकित्सा, ग्रहों, तारों और वनस्पतियों पर उत्तम पुस्तकें लिखी गयीं। 'पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है तथा पृथ्वी गोल है' जैसे सिद्धांतों की खोज भारतीयों द्वारा पहले ही कर ली गयी थी जिसे यूरोप ने काफी बाद में माना था। उसी प्रकार चिकित्सा के क्षेत्र में, गणित के क्षेत्र में तथा अन्य वैज्ञानिक क्षेत्रों में प्राचीन भारत की उपलब्धि असाधारण रही है। इस तरह के ज्ञान को आगे बढ़ाने में धार्मिक या अन्य विचारों द्वारा कोई विरोध या प्रतिरोध नहीं था।

दार्शनिक चिंतन में भारत में नास्तिक सोच तक का विकास और वृद्धि हुई। आप जानते ही होंगे कि जैन और बौद्ध धर्म ईश्वर के बारे में मौन हैं। यह सब कुछ हमें क्या बताता है? यही कि भारतीय संस्कृति भौतिकवादी अथवा अध्यात्मवादी दोनों रही है।

> भारत की संस्कृति उसकी जनता की सरलता और विद्वत्ता की जीवित अभिव्यक्ति है।

2.2 सांस्कृतिक पहचान, धर्म, क्षेत्र और नृजातीयता

हमारी सांस्कृतिक पहचान विभिन्न कारकों जैसे कि धर्म, प्रांत आदि पर आधारित है, जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक भारतीय की कई पहचान हो सकती हैं। इनमें से कोई एक पहचान अवसर विशेष पर ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो सकती है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में व्यक्ति खुद को किस जगह पर पाता है। इस प्रकार हर एक व्यक्ति दूसरे के साथ अपनी कुछ समानताओं को देख सकता है, पर साथ ही साथ कुछ अन्य पहलुओं में विशाल असमानताएँ पा सकता है। उदाहरण के लिये मान्यताओं, पूजा के स्वरूप और अनुष्ठानों के अलावा, संपूर्ण देश के दृष्टिकोण से उनके बीच भी बहुत कम समानतायें हैं जो एक विशेष धर्म को मानते हैं। यहाँ तक कि पूजा और कर्मकांड के स्वरूपों में भी वर्गीय और प्रांतीय भिन्नतायें हैं।

इस प्रकार सांस्कृतिक रूप से न तो सभी हिन्दू समान हैं, न ही सभी मुसलमान समान हैं। तमिलनाडु के ब्राह्मण कश्मीर के ब्राह्मणों से काफी अलग हैं। उसी तरह केरल और उत्तर प्रदेश के मुसलमान अपनी संस्कृति में कई पक्षों में भिन्न हैं। प्रांतीय पहचान ज्यादा गहरी और वास्तविक है। विभिन्न जाति और धर्म के लोगों में क्षेत्रीय सांस्कृतिक समानतायें हैं जैसे कि भाषा, भोजन, पोशाक, मूल्यबोध और विश्व दृष्टिकोण। बंगाल में हिन्दू और मुसलमान

टिप्पणी

दोनों ही बंगाली होने पर गर्व महसूस करते हैं। अन्यत्र हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों में क्षेत्रीय संस्कृति के कई तत्त्व समान हैं।

सैद्धांतिक रूप से भिन्न-भिन्न धार्मिक समूह भिन्न-भिन्न धार्मिक सिद्धांतों के प्रति समर्पण रखते हैं। उदाहरण के लिये वेद और शास्त्र हिन्दुओं के, कुरान और हदीस मुसलमानों के, तथा बाईबल ईसाइयों के प्रेरणा स्रोत हो सकते हैं हालांकि कर्मकांड और जीवन पद्धति के स्तर पर भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायियों में काफी अन्तर्मिश्रण प्रचलित है।

आदिवासी समूहों के बीच में नृजातीय संस्कृति दृढ़ है। उदाहरण के लिये नागालैंड जैसे छोटे से राज्य में एक दर्जन से ज्यादा भिन्न-भिन्न नागाप्रजातियाँ तथा उनकी पोशाकें, बोली और मान्यतायें भी एक दूसरे से भिन्न हैं। छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले के कई समूह अपने को अलग-अलग नृजातीय मूल के होने का दावा कर रहे हैं।

2.3 सांस्कृतिक प्रभाव

आधुनिक संदर्भ में हमारी संस्कृति पर कम से कम तीन महत्त्वपूर्ण प्रभाव हैं। वे हैं: पश्चिमीकरण, उभरती राष्ट्रीय सांस्कृतिक शैलियाँ और लोकप्रिय संस्कृति।

स्वतंत्रता से पहले कुलीन तंत्र और प्रशासनिक सेवा के लोगों के द्वारा कुछ पश्चिमी तरीके अपना लिये गये थे। इसका प्रभाव कई वर्षों में मध्यम वर्ग में तथा कुछ हद तक गावों में भी फैला है। गाँवों में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की बढ़ती माँग इस स्थिति का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

आजादी के लिये संघर्ष के दौरान एक नयी शैली का विकास हुआ था। यह एक राष्ट्रीय शैली हो गई थी। उदाहरण के लिये गाँधी टोपी और खादी समारोहों में बस एक प्रतीक मात्र रह गया है लेकिन इसने देश की एकता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है और संस्कृति को एक समानता प्रदान की है।

लोकप्रिय संस्कृति जो जन मीडिया का उत्पाद है, सांस्कृतिक एकता का एक और घटक है। समाज पर फिल्मों का प्रभाव बहुत ही गहरा है। रेडियो और दूरदर्शन ने भी छवि और आचार व्यवहार को काफी प्रभावित किया है। समाज पर उनकी पकड़ को हम नकार नहीं सकते हैं। आधुनिक मीडिया ने पारम्पारिक और जनहित दोनों तरह के मुद्दों को उठाया है।

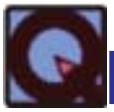

पाठगत प्रश्न 2.2

1. बाहर से आकर भारत में बस जाने वाले लोगों के दो उदाहरण दें।
2. जलवायु का कौन-सा घटक भारत को एकता प्रदान करता है?
3. उन सभ्यताओं के नाम बताइये जिनके साथ हड़प्पा के लोग समुद्रपारीय व्यापार करते थे।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- संस्कृति का अभिप्राय बहुत व्यापक और विस्तृत है। इसे समग्र समाकलित एवं सीखे हुए व्यवहार के रूप में परिभाषित किया गया है। यह एक समाज में रहने वाले लोगों की जीवन-शैली को बताती है।
- संस्कृति समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित ज्ञान, विश्वास, नैतिक मूल्य, कला, रीति रिवाज और विभिन्न प्रकार की कुशलताओं और आदतों से मिलकर बनती है।
- अपनाने की क्षमता और व्यापकता के कारण भारतीय संस्कृति दीर्घजीवी बनी हुई है।
- विभिन्नता में एकता भारतीय संस्कृति के प्रमुख लक्षणों में से एक है जो इसे विशिष्ट बनाती है।
- विभिन्न संस्कृतियों का संश्लेषण कई कालों से चला आ रहा है जिसने उस मिश्रित या सांझी संस्कृति को जन्म दिया जिसे आज भारतीय संस्कृति कहते हैं।
- अध्यात्म तथा मूल्यबोध पर आधारित जीवन-शैली भारतीय संस्कृति का केन्द्र-बिन्दु है पर इसमें एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी है।

पाठांत प्रश्न

1. संस्कृति के विभिन्न घटक क्या हैं?
2. भौतिक और गैर-भौतिक संस्कृति का अर्थ बतइाये।
3. भारतीय संस्कृति के धर्मनिरपेक्ष लक्षण को परिभाषित कीजिए।
4. भारतीय संस्कृति के विशिष्ट-लक्षणों का विवरण दीजिये।
5. इन पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिये-

   अ) भारत में सांस्कृतिक संश्लेषण।

   ब) आध्यात्मिकता

   स) भारतीय संस्कृति में लचीलेपन (Adaptibility) की विशेषता
6. भारतीय संस्कृति के संदर्भ में विविधता में एकता की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 1. पंजाब

2. बीहू

3. कुषाण, शक और पार्थियन

4. उड़ीसा

2.2 1. कुषाण और मुगल

2. मानसून

3. सुमेरियन